महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली के प्रभाव का अध्ययन

शालिनी गर्ग
एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल),
उत्तराखण्ड

सारांश

वर्तमान समय में महिलाओं की भूमिका और उनकी जीवन–शैली में परिवर्तन हुआ है। भारत की आजादी, निर्माण व विकास में स्त्रियों की जीवन–शैली में परिवर्तन आये हैं। गाँव व शहरी महिलाओं के स्वयं अर्जन के कारण वो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं। अतः वे अपने जीवन से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी महिलाएँ जीवन–शैली के प्रति अधिक सशक्त हैं।

मुख्य शब्द : सशक्तिकरण, विरोधाभास, निषिद्ध, आत्मविश्वास,

प्रस्तावना

सशक्तिकरण' शब्द का प्रयोग, खास तौर पर स्त्रियों के सन्दर्भ में हाल ही से होना प्रारम्भ हुआ है। प्रथम दृष्टता, इसमें विरोधाभास प्रतीत होता है क्योंकि शक्ति का अर्थ है निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करना और कार्यों को निर्दिष्ट दिशा में आगे बढ़ाना। इस प्रकार की शक्ति भारत के संविधान द्वारा दी गई है, जिसके अनुसार स्त्रियों को बराबर का नागरिक माना गया है और लिंग के आधार पर भेदभाव को निषिद्ध किया गया है। स्त्रियों के सशक्तिकरण की प्रक्रिया उनके द्वारा अपने व्यक्तिगत जीवन में जोर देकर अपनी बात कहने, अपने अन्दर विश्वास पैदा करने और अपने को एक स्त्री के रूप में प्रस्तुत करने से प्रारम्भ होती है और धीरे–धीरे उनके व्यवहार को बदलती है। आर्थिक स्वतन्त्रता उत्पादक संसाधनों के स्वामित्व के अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा छोटी–मोटी पूँजी को लगाकर लाभ प्राप्त करने और स्त्री सम्बन्धी तथा सामाजिक मामलों में नेतृत्व सम्भालने के कार्य भी स्त्री सशक्तिकरण के अंग हैं। स्त्री सशक्तिकरण में आत्मविश्वास बढ़ाने, स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता और व्यक्तिगत स्वातन्त्रय का भाव भी निहित है। **जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में – "लोगों को जगाने के लिए स्त्रियों को जगाना पड़ेगा। एक बार स्त्री परिवर्तन की ओर बढ़ जाये तो परिवार परिवर्तित होंगे, गाँव परिवर्तित होगा।"**

कृषि के विकास में महिलायें अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिसमें फसल काटने के पश्चात् किये जाने वाले कार्य भी शामिल होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों को परिवार चलाने, ईंधन जुटाने, चारे पानी का प्रबन्ध करने आदि में स्त्रियों की मुख्य भूमिका होती है और उनका अधिकतर समय इस प्रकार के घरेलू काम धन्धों में व्यतीत होता है। वे कृषि सम्बन्धित कार्यों में, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में व्यस्त रहती हैं, पशु–पालन सम्बन्धी सारा काम उन्हें ही करना पड़ता है। महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया उनमें जोर देकर अपनी बात कहने, अपने व्यक्तिगत जीवन में आत्मविश्वास पैदा करने और स्त्री के रूप में अपनी रक्षा करने से प्रारम्भ होती है और इन्हीं की पूर्ण शक्ति के रूप में उन्हें आर्थिक रूप से स्वतन्त्रता प्राप्त करने और उत्पादक सम्पत्ति पर स्वामित्व स्थापित करने के अवसर दिये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें छोटी पूँजी तथा रकम का संचालन करने और सामुदायिक हित के मामलों में नेतृत्व की भूमिका निभाने के अवसर भी मिलते हैं। महिला सशक्तिकरण में कुशलता जनित आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और स्वतन्त्रता प्राप्त करना भी शामिल है।

बन्सल (1998) के अनुसार – स्त्रियाँ अभी भी आर्थिक मामलों, पारिवारिक मनोरंजन, विवाह, घरेलू सुविधाओं तथा व्यवसाय चुनने के मामलों में सशक्तिकरण से वंचित हैं।

बगाती (2003) के अनुसार – स्त्रियों का आर्थिक क्षेत्र में योगदान स्वयं ही समाज में उनके मान, सम्मान तथा भूमिका में सकारात्मक उत्थान लाया है।

ब्लाइड, टौब एवं टान (2001) ने यह माना कि स्त्रियों को स्वयं को शक्तिशाली, योग्य तथा स्व–निर्णय पूर्ण व्यक्ति मानने से हतोत्साहित किया जाता है ताकि वे अपने जीवन पर नियन्त्रण न रख सकें। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ताओं ने स्त्रियों को अपनी बढ़ी शक्ति का अहसास कराने के लिए खेलों

में भाग लेने की सलाह दी है ताकि वे अपनी वास्तविक शक्ति से अवगत हो सकें।

उद्देश्य

1. शहरी महिलाओं की जीवन–शैली का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं की जीवन–शैली का अध्ययन करना।
3. स्थानीयता का प्रभाव देखने के लिए ग्रामीण व शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उपकल्पना

1. शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण पर जीवन–शैली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. ग्रामीण व शहरी महिलाओं के सशक्तिकरण में कोई अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन के लिए नैनीताल जिले के 30 ग्रामीण व 30 शहरी महिलाओं को लिया गया।

परीक्षण सामग्री

एस0के0 बावा और सुमनप्रीत कौर द्वारा निर्मित जीवन–शैली मापनी

परिणाम तालिका

क्रम सं0	शहरी महिलायें		ग्रामीण महिलायें		t	'p'
	Mean	S.D.	Mean	S.D.		
1.	2.83	2.14	5.90	2.61	1.46	N.S.
2.	3.33	2.08	3.40	2.55	0.13	N.S.
3.	7.23	3.14	6.63	2.06	0.92	N.S.
4.	7.08	3.18	3.90	2.36	2.06	0.05
5.	3.74	2.46	3.20	2.56	0.98	N.S.
6.	8.11	3.38	7.70	3.46	0.55	N.S.
7.	4.16	2.44	3.03	2.30	2.19	0.05
8.	8.66	3.55	7.50	2.86	1.72	N.S.
9.	6.74	2.74	5.80	3.05	1.46	N.S.
10.	5.41	2.91	5.13	3.10	0.43	N.S.
11.	4.01	2.59	2.53	2.57	2.62	0.05
12.	4.90	2.78	3.80	2.12	2.15	0.05
13.	6.38	2.92	7.13	2.55	1.04	N.S.
14.	8.51	3.21	6.12	2.36	2.28	0.05
15.	4.01	2.59	2.53	2.57	2.62	0.05

परिणाम

परिणाम देखने से स्पष्ट होता है कि शहरी महिलाओं में ज्यादा औसत प्रापत किया और दोनों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया। ये पूर्णतः सत्य है कि शहरी *महिलाओं* की जीवन–शैली ग्रामीण *महिलाओं* की जीवन–शैली से ज्यादा सशक्त हैं।

व्याख्या एवं निष्कर्ष

महिलायें गाँव की बजाय शहरी नगर में अधिक स्वतन्त्रता का अनुभव करती हैं। ग्रामीण लोगों का जीवन सरल और सादा होता है। वे नगर की तड़क–भड़क और बनावटी जीवन से दूर होते हैं। उनके पास आय भी उतनी नहीं होती है कि वे जरूरत की चीजों के अलावा फैशन पर खर्च करें। ग्रामीण समाज अपेक्षाकृत स्थिर समाज होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **बगाती, (2003),** माइक्रोकेडिट एण्ड एम्पायरमेंट आफ वूमेन, जर्नल ऑफ सोशल वर्क, रिसर्च एण्ड इमलुएशन 4, 19, 35
2. **ब्लाइड, टौब एवं टान , (2001)** स्पोर्ट पार्टीसियेशन एण्ड वीमेन्स एम्पावरमेंट, एक्सीपीरियेन्सेज ऑफ कालेज एथलीट, इन मेलनिक, एम. जे. (सम्पा) कन्टेमपारेरी इशूज इन सोशियोलोजी आफ स्टोर, केम्पेन, सं. रा. अमेरिका
3. **बन्सल, बी, (1998)** जेण्डर एज ए सोर्स ऑफ वेरियेशन इन परसेप्शन ऑफ आटोनोनी ऑफ कल्चरल साइकोलोजीए 14, 21–24
4. जोइण्ट इक्वेलिटी एण्ड हयूमेन राइट्स फोरस
5. **बिष्ट, दीपा 2009,** नारी सशक्तीकरण के सोपान
6. **सिंह आर0एन0** – नारी शक्तिकरण का सच
7. **समाचार पत्र – दैनिक जागरण**
8. **समाचार पत्र – अमर उजाला**